# महानगर में जीवन की जंग : बंगलोर के संदर्भ में

डॉ॰ अनुपमा तिवारी
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी
अलायंस विश्वविद्यालय, बंगलोर
फोन – 8886995593/8142623426
ईमेल - anupama.tiwari@alliance.edu.in

पुराणों में कल्याणपुरी के नाम से चर्चित नगर आज का बंगलोर शहर औद्योगिकी के साथ ही साथ अपने सुहाने मौसम के कारण भी लोगों को आकर्षित करता है। कर्नाटक राज्य की राजधानी यह शहर एक नहीं अपितु कई कारणों से वैश्विक स्तर पर अपने नाम को स्थापित किए हुये है यथा – भारत की सिलिकान वैली या भारत की आईटी राजधानी के रूप में। आज के संदर्भ को लें तो समूचे भारत के हर राज्य के हर शहर के लोग इसकी शरण में हैं। व्यापार, शैक्षिक जगत, औद्योगिकी यहाँ तक कि राजनीति में भी अपना सिक्का जमाये लोग बंगलोर में जमे हुये हैं। प्राकृतिक सौंदर्य, पौराणिक थाती और पारंपरिकता को सहेजे हुये इस शहर की विशेष महत्ता और अपनी अलग भव्यता है। दूसरा ध्रुव सत्य यह भी है कि किसी भी शहर को विशेष पहचान मिलती है उसके वैशिष्ट्य के कारण तथा बसे हुये नागरिकों के कारण। जिस प्रकार पाठकगण साहित्यकार के लिखे हुये को अपनी टिप्पणी से, प्रतिक्रिया से उसे अव्वल दर्जे पर ले जाते हैं या फिर दर्शक फिल्मों को हिट व फ्लॉप कराते हैं उसी श्रृंखला में किसी भी महानगर को महानगर बनाने में अलग - अलग जगहों से आए नागरिकों का भी योगदान पर्याप्त मात्रा में होता है। जिस प्रकार एक इमारत को बनाने में सैकड़ों हाथों का योगदान होता है उसी प्रकार एक स्थान को उत्तुंग पर पहुंचाने का श्रेय जनता को जाता है और भिन्न – भिन्न जाति, वर्ग, समुदाय और धर्म के लोग मिलकर इसे खूबसूरत बनाते हैं। इस खूबसूरती के पीछे कई बलिदान, संघर्ष, उपेक्षा, अवमानना की स्थिति भी सन्निहित होती है जिसका दर्शन अनुभव में पगी आँखें ही सूक्ष्मता से कर पाती हैं न कि समतल जमीन पर सहजता से बहुवस्तु पाने वाले व भविष्य के खयाली पुलाव पकाने वाले दिग्भ्रमित लोग। एक अनुभवी और उच्चपदासीन, कर्मठ महिला से जब बंगलोर के बारे में कुछ जानने की जिज्ञासा प्रकट की (क्योंकि मैं इस शहर को मात्र दो वर्षों से जानती हूँ) तो अति उत्साह और उल्लास के साथ उन्होने स्मृतियों का पुलिंदा और अपने मन के उद्गार मेरे समक्ष उड़ेल दिये कि किस प्रकार उन्होने अपने सामने इस शहर को विकसित होते देखा है। जानकर विस्मय हुआ कि आज से पच्चीस वर्ष पूर्व यह शहर एक साधारण गतिवाला, स्थानीय जनता के दैनंदिन गतिविधियों से युक्त,आध्यात्मिक और प्राकृतिक शालीनता को समेटे हुये था। फुरसत के क्षण व्यतीत करने के लिए,प्रचंड गर्मी से निजात पाने के लिए तथा अवकाश प्राप्त

अधिकारी गण शांति पाने के लिए बंगलोर आते थे। जब विदेशी कंपनियों की नींव यहाँ रखी गयी और अकस्मात इतना कार्य आ गया यथा – इमारत निर्माण, साफ – सफाई, दोयम दर्जे के कर्मचारी, यातायात चालक, प्रचारक आदि तब यह मात्र स्थानीय जनता के बस की बात न थी और संपर्क साधा गया देश भर के अशिक्षित जनता से। इस प्रकार करोड़पति बने यहाँ के स्थानीय जमींदार। शनै: - शनै: बंगलोर की आभा राष्ट्रीय से अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर आलोकित हुयी। आजीविका, नूतन प्रयोग और आर्थिक सक्षमता का सशक्त माध्यम बना बंगलोर। आज एक अलग ही शान और गुमान से बंगलोर का नाम सबके जुबान पर आता है और हर वर्ग, समुदाय और धर्म के लोग सगर्व कहते हैं – "नम्मा बंगलुरू" अर्थात हमारा बंगलोर।

सजे – सजाये बंगलोर में जो जीवन का जंग है वह भी कई प्रकार से है। यहाँ देश के हर प्रांत से लोग हैं जिन्हें हम प्रवासी भी कह सकते हैं। बंगलोर में प्रवासियों की तीन श्रेणी बना सकते हैं प्रथम – अशिक्षित श्रेणी, द्वितीय - शिक्षित श्रेणी और तृतीय -व्यावसायिक श्रेणी। प्रथम श्रेणी के लोगों का भी वर्गीकरण कुछ इस प्रकार है यथा - भोजन खिलाने वाले वाले युवक बिहार ओड़ीसा से अधिक हैं। बिल्डिंग निर्माण में मजदूर उत्तर प्रदेश से, सिक्योरिटी ज़्यादातर आसाम और नेपाल से हैं, घरों में काम करने वाले लोग ज़्यादातर पश्चिम बंगाल से, जलपान और और सुबह के नास्ते के लिए आंध्र प्रदेश की बड्डियाँ प्रसिद्ध हैं। इनका जंग कई पैमानों पर है। एक तो अशिक्षा, दूसरी अलग संस्कृति व समुदाय और तीसरी उनकी पहचान। अपने प्रदेश में अधूरी शिक्षा के चलते और रोजगार के अवसर न मिल पाने के कारण ये बंगलोर में आते हैं और श्रम से पंद्रह से बीस हजार रुपए की आमदनी पर फूले नहीं समाते। इस प्रश्न पर कि आप अपने प्रदेश में क्यों नहीं काम करते तो एक ही जवाब कि वहाँ न तो काम है और न ही इतनी आय। सुबह से लेकर शाम तक अफसरों, ठेकेदारों और जमींदारों की हाँ हुज़ूरी करते, उनके कटु वचनों को "दुधारी गाय की लात भली" का प्रसाद ग्रहण करते, अपने देश की स्मृतियों को अन्तर्मन में सँजोये बंगलोर की वादियों में बंजारों सा जीवन व्यतीत करते हैं। दूसरी श्रेणी के लोग पढ़ाई करने आते हैं और उसी के साथ पार्ट टाइम जॉब भी करते हैं। गर्मजोशी उन्हें अधिक आमदनी के लिए जहां प्रेरित करती है वहीं कुछ वर्षों के पश्चात समय से पूर्व बूढ़ा भी बना देती है। एक शोध के अनुसार सर्वाधिक डायबिटीज़ के मरीज़ बंगलोर में हो रहे हैं उसमें भी विशेषत: जो लोग प्राइवेट कंपनियनों में कार्यरत हैं। ऑफिस में आए दिन नई चुनौतियों को स्वीकार करना, अधिकाधिक समय स्क्रीन पर बिताना, स्वयं को अधिक होशियार सिद्ध करने की प्रतिस्पर्धा पाले रहना, शारीरिक श्रम से दूर होते जाना जहां उन्हें सुंदर आय (Handsome Salary) दिला रही है वहीं सबसे बड़ा धन स्वास्थ्य को छीनती जा रही है। दुख इस बात का है कि 'मरता क्या न

करता' की स्थिति में जी रहे लोगों के पास विकल्प बहुत कम हैं, यहाँ भी पहचान प्रश्नांकित है। तृतीय श्रेणी के लोग लोकल बाजार में कपड़ों और ज्वेलरी के व्यापारी राजस्थानी,मारवाड़ी अधिक हैं। इनकी स्थिति अन्य दो श्रेणी के लोगों से अधिक बेहतर और सुखद भी होती है, परंतु पहचान इनकी भी कुछ नहीं है।

सर्वविदित है कि दक्षिण भारत में भाषायी अस्मिता की जंग सदियों की रही है। जैसा कि पहले ही उद्धृत किया है कि बंगलोर को जानने के लिए एक श्रद्धेया महिला से मेरी वार्तालाप हुई। उसी क्रम में बातचीत के दौरान यह भी पता चला कि पच्चीस वर्ष पूर्व इस शहर में भाषा के नाम पर मात्र अङ्ग्रेज़ी और कन्नड भाषा का बोलबाला था। उस समय जिस नवागन्तुक को यहाँ के लोगों से मेल – जोल करना होता या फिर बाजार में आवश्यकता की चीजों के लिए घूमना पड़ता उन्हें कन्नड अवश्य ही सीखना पड़ता। परंतु आज स्थिति परिवर्तित हो चुकी है क्योंकि अब बंगलोर को यदि बहुभाषी शहर कहा जाये तो अतिशयोक्ति न होगा। उदाहरणार्थ एक पार्क में खेलते हुए कुछ बच्चों को ध्यान से सुना जाए तो वहाँ एक साथ कई भाषाओं का आदान – प्रदान एक साथ होता है। वहीं हिन्दी, बांग्ला, उड़िया, कन्नड़ा, तेलुगु, तमिल सब एक साथ सुनने को मिल जाता है। अभिप्राय यह है कि यहाँ सभी भाषाओं का वर्चस्व और महत्व है। अब ऐसी स्थिति में स्थानीय भाषा सीखने की बाध्यता हो भी, तो भी चाहकर भी व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। भाषा समाज और परिवेशगत होती है। जैसे परिवार के नवजात शिशु को कुछ भी बताने की आवश्यकता नहीं होती और वह सहज ही परिवार और परिवेश से भाषा और संस्कार सीख लेता है और भविष्य में कुछ भी सीखने की प्रक्रिया उसकी रुचि और आवश्यकता पर निर्भर होती है उसी तरह भाषा भी व्यक्ति की रुचि और आवश्यकता पर निर्भर होती है। यह सत्य है कि भाषा हमें संस्कार देती है परंतु चयन का अधिकार हमारा होता है। बंगलोर में जितने समुदाय और वर्ग हैं सबकी भाषा की प्रभुता है। बंगलोर में बहुभाषी लोगों के कारण यहाँ की संस्कृति भी बहुभाषी संस्कृति है। स्थानीय लोगों को लगता है कि देश के दूर दराज से आए लोग यहाँ आते तो रोजगार के लिए हैं पर यहीं बस जाते हैं जो उन्हें कम जमता है। इनके मुताबिक अन्य शहरों से आए लोग उनकी संस्कृति को आत्मसात नहीं कर रहे हैं अपितु उसे दूषित भी कर रहे हैं। ऐसे में अपनी लोक संस्कृति का संरक्षण यहाँ के लोगों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

बंगलोर शहर हाउसिंग सोसाइटियों में तब्दील होता जा रहा है। 15 – 20 मजिलों की इमारतें। ऊपर खिड़कियों से झाकों तो लगेगा कि विश्व का कोई नामचीन शहर है। रोशनी, सजावट, सड़कों का कोलाहल और ट्राफिक जाम के संदर्भ में विश्व का दूसरा शहर है बंगलोर है। हर व्यक्ति भागता हुआ जल्दबाज़ी में दिखाई देगा। गंतव्य स्थान पर समय से न पहुँचने पर पैसे काटे जाते हैं या तो रिमार्क

लगता है उसी का भय इन्हें रेस में दौड़ाए रहता हैं। बारिश इस रफ्तार को मंद कर देती है। यहाँ की तंग गलियों में जलभराव हो जाने के कारण गति धीमी हो जाती है। ट्राफिक सिग्नल पर लंबी कतार, बाइक चलाने वाले लोग घंटों भीग रहे होते हैं। जोमैटो वाले ऑर्डर पहुँचाने के लिए बहुत तपस्या करते हैं अगर विलंब हुआ तो कस्टमर की कड़वी बातों का घूंट पीना पड़ता है। जीवन का जंग हर क्षण चलता रहता है और जंग जीतने के बाद मिलने वाली अपर खुशी आत्मविश्वास को प्रबल कर देती है । यहाँ के जन सैलाब में व्यक्ति का व्यक्ति से संपर्क बहुत ही कम हो पाता है। एक ही शहर में रहते हुए दो रिश्तेदार भी शायद वर्षों बाद ही एक दूसरे से मिल पाते हैं। पैसा है, पद है, नाम है पर नाम गुमनाम होता है। कोई पहचान नहीं रहती किसी भी व्यक्ति की क्योंकि उसकी पहचान कार्य से नहीं अपितु कंपनी से होती है। युवा पीढ़ी नशे में धुत्त, सिगरेट फूंकने, क्लब में देर रात नाचने – गाने और शराब में पैसा फेंकने को आधुनिकता का पर्याय समझती है। अनियमित दिनचर्या, पैसे कमाने और उड़ाने की भूख इन्हें घर से ऑफिस और क्लब तक ही जोड़े रहती है। अपने प्रदेश में न होने के कारण ये सामाजिक आचार – व्यवहार से भी कटते चले जाते हैं। भीड़ में, पैसों के ढेर में, क्लबों के कोलाहल में होते हुये भी भीतर से हर व्यक्ति अकेला होता है। बहुधा लोगों की हँसी और मुस्कान भी कृत्रिम होती है। छुट्टियों में सब दूर दूर तक की योजना बनाते हैं परंतु मानसिक शांति बहुत कम ही मिल पाती है। बड़े – बड़े शॉपिंग मॉल में लोग समय बिताते हैं। माता – पिता बच्चों को सारी सुविधा मुहैया कराने में अपना बड़कपना समझते हैं। मॉल में बड़े – बड़े स्क्रीन पर पर खेलते बच्चों का न तो शारीरिक विकास हो पाता है और न ही मानसिक। अगर यह कहा जाए कि झुंड में जो खुशी तलाशने लोग आते हैं वहाँ चेहरे पर सजी उनकी मुस्कान भी छद्म होती है तो शायद अनुचित न होगा । यह शहर देश नहीं बल्कि विश्व भर से लोगों को रोजगार दे रहा है, आमदनी का स्रोत बना हुआ है। हर वर्ग, धर्म, समुदाय के लोगों का जमावड़ा है, बहुसंस्कृति सम्पन्न है परंतु पहचान क्या है बंगलोर की ? क्या यहाँ का वातावरण पहचान है जो प्रचंड गर्मी और कड़ाके की ठंड को बर्दाश्त करने की क्षमता को छीनकर मानव को सुकुमार बनाने वाली है? क्या विदेशी कंपनियाँ यहाँ की पहचान हैं जो मानसिक शांति भंग करके बीमारी की गर्त में धकेलने वाली हैं? क्या बहुभाषी संस्कृति ही यहाँ की पहचान है जहां बहुत कुछ होते हुये भी कुछ नहीं है और कुछ न होते हुए भी बहुत कुछ है? सकारात्मकता में ही विश्वास है अत: मेरी दृष्टि में – यही बंगलोर की पहचान है !